श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

A

प्रस्तावना

श्रीश्रीगुरु गौरांग राधागोविन्दजी की अपार करुणा से **श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी** नामक क्षुद्र पुस्तक की रचना कर रहा हूँ। पुरुषोत्तम मास का माहात्म्य नारदीय पुराण में वर्णित है। सौर मास के साथ चान्द्र मास का साम्य रखने के लिए प्रति ३२ मास के बाद एक अधिमास उदित होता है। अमावस्या से अमावस्या तक इस मास की अवधि होती है। यह मास मलमास नाम से प्रसिद्ध है। इस मास में कोई रविसंक्रान्ति नहीं होती और न कोई वैदिक शुभकर्मादि का अनुष्ठान होता है। अन्य मास की भाँति इस मास का कोई अधिदेवता नहीं है। पूर्वोक्त कारण वैदिक कर्मीलोगों से उपेक्षित अनादृत व अवज्ञात होकर अधिमास वैकुण्ठनाथ के पास जा कर मनोदुःख निवेदन किया। भगवान् नारायण उसका कोई समाधान देने में असमर्थ होकर उसको लेकर गोलोक में श्री गोलोकनाथ के पास उपस्थित हुये। अधिमास ने भगवान् श्रीकृष्ण के चरण में नमस्कार करके अपना मनोदुःख निवेदन किया और बोले- भगवन् मैं बड़ा दुर्भागा हूँ। मैं सब की उपेक्षा और अनादर का पात्र हूँ। आप सब के स्वामी, अन्य सब मास के अधिपति भी हैं परन्तु मेरा कोई स्वामी नहीं हैं।

B

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

अन्य सब मास में रविसंक्रान्ति होती है, मुझ में नहीं है। अन्य सब मास में कोई ना कोई शुभकर्म है किन्तु मुझ में कुछ भी नहीं है। लोग मुझे मलमास कहते हैं।

आप सब के प्रभु हैं, मेरा कल्याण कीजिये। अधिमास की इस प्रकार आर्ति सुन कर उसको सान्त्वना देते हुये भगवान् श्रीराधानाथ कहने लगे-

अहमेतैर्यथा लोके प्रथितः पुरुषोत्तमः।
तथायमपि लोकेषु प्रथितः पुरुषोत्तमः।।
अस्मै समर्पिताः सर्वे य गुणा मयि संस्थिताः।
मत्सादृश्यमुपागम्य मासानामधिपो भवेत्।
जगत्पूज्यो जगद्वन्द्यो मासोऽयं तु भविष्यति।
सर्वे मासाः सकामाश्च निष्कामोऽयं मया कृतः।
अकामः सर्वकामो वा योऽधिमासं प्रपूजयेत्।
कर्माणि भस्मसात् कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयम्।।
कदाचिन्मम भक्तानामपराधेति गण्यते।
पुरुषोत्तमभक्तानां नापराधः कदाचन।
य एतस्मिन्महामूढा जपदानादिवर्जिताः।
सत्कर्मस्नानरहिता देवतीर्थद्विजद्विषः।
जायन्ते दुर्भगा दुष्टाः परभाग्योपजीविनः।
न कदाचित् सुखं तेषां स्वप्नेऽपि शशशृङ्गवत्।
येनाहमर्चिता भक्त्या मासेऽस्मिन् पुरुषोत्तमः
धनपुत्रसुखं भुङ्क्त्वा पश्चात् गोलोकवासभाक्।।

श्रीराधानाथ ने कहा हे रमापति! मैं जिस प्रकार इस जगत में पुरुषोत्तम के रूप में विख्यात उसी प्रकार अधिमास भी इस लोक में पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध होगा। मुझ में जितने गुण है उस में भी उन सबको समर्पित करता हूँ। यह मास जगत में पूज्य व जगद्वन्द्य है। अन्य सब मास सकाम है, परन्तु यह निष्काम है। जो निष्काम वा सकाम होकर भी इस मास का पूजन करेगा वे समस्त कर्मों को भष्मीभूत कर मुझे प्राप्त करेगा। मेरे भक्तों से कदाचित् अपराध हो सक्तता है किन्तु इस पुरुषोत्तम मासके भक्तों से कदापि अपराध नहीं होगा। जो मूढ़लोग इस पुरुषोत्तम मास में जप दानादि वर्जित, सत्कर्म स्नानादि रहित होंते हैं एवं देवतीर्थ व द्विजों के प्रति विद्वेष करते वे सब दुष्ट अभागे परभाग्योपजीवी होंगे वे स्वप्न में भी सुख नहीं प्राप्त करते। इस मास में जो मुझे भक्ति पूर्वक पूजा करते वह धन पुत्रादि सुख भोग करके अन्तमें गोलोकवासी होंगे। गंगा के तुल्य नदी नहीं, कल्पतरु सम तरु नहीं, वेद के तुल्य शास्त्र नहीं, सत्य के तुल्य धर्म नहीं, वासुदेव के समान देव नहीं एवं पुरुषोत्तम के तुल्य मास नहीं है। पुरुषोत्तम मास की महिमा सुनकर भी इस माह की अवज्ञा के कारण मेधावी ऋषि की कन्या उस जन्म में बहुत से कष्ट भोग कर द्रुपदराजा के यज्ञकुण्ड से द्रौपदी होकर आविर्भुत हुई थी। पाण्डवों ने द्रौपदी के साथ पुरुषोत्तम व्रत

करके वनवास के दुख से मुक्त हुये थे। वाल्मिकीमुनि दृढ़धन्वा संवाद में पुरुषोत्तम व्रत का माहात्म्य कथित हुआ है। इस मास में षोड़शादि उपचार के द्वारा श्रीराधा सहित भगवान् श्रीकृष्ण की पूजा कर्तव्य है।

अर्घ्यमन्त्र–देवदेव नमस्तुभ्यं पुराण पुरुषोत्तम।
गृहाणर्घ्यं मया दत्तं राधया सहित हरे।।
नीराजनमन्त्रं-
नीराजयामि देवेशमिन्दीवरदलच्छविम्।
राधिकारमणं प्रेम्ना कोटिकन्दर्पसुन्दरम्।।
ध्यानमन्त्रं-
अन्तर्ज्योतिरन्तरत्नरचिते सिंहासने संस्थितम्।
वंशीनादविमोहितब्रजवधूवृन्दावने सुन्दरम्।।
ध्यायेद्राधिकया सकौस्तुभमणिप्रद्योतितोरस्थलम्।
राजद्रत्नकिरीटकुण्डलधरं प्रत्यग्रपीताम्बरम्।।
प्रणाममन्त्रं-वन्दे नवघनश्यामं द्विभुजं मुरलीधरम्।
पीताम्बरधरं देवं सराधं पुरुषोत्तमम्।।
मन्त्रं- गोवर्द्धनधरं वन्दे गोपालं गोपरूपिणम्।
गोकुलोत्सवमीशानं गोविन्दं गोपिकाप्रियम्।।

वित्तशाठ्य (धन रहते हुए भी भगवान की सेवा में कृपणता) परित्याग करके पूजा यथासाध्य करणीय है। प्रति जन्म में पुत्रादि सुलभ है किन्तु धर्माचरण सुलभ नहीं है।

स्त्रीपुत्रादि कोई भी किसी का सहारा नहीं होते हैं। परन्तु धर्म ही एकमात्र सहारा है। आधि व्याधि वार्द्धक्यादि मनुष्य का कर्मजात पूर्व शत्रु है। आयु छिद्रपात्रस्थ जल की भाँति प्रतिदिन गिरती रहती है। लक्ष्मी तरंग की तरह चञ्चल है, यौवन कुसुम की भाँति परिवर्तनशील है, सांसारिक सुख स्वप्न की भाँति निरर्थक है। इसीलिए इनसब से वैराग्य लेकर भगवान् में प्रीति ही पुरुषार्थ है।

इस महिना में बहुत कुछ खाद्य और अपराध का नियम है। भगवत्प्रीति के लिए वे सब पालनीय है। कृच्छ साधन छोड़ कर कृष्णप्रीत्यर्थ भोग त्याग ही वैष्णवी रीति है। इस महिना में हविष्यान्न सेव्य है। हविष्यान्न–गेंहु, यव, मुंग, आद्रक, वास्तुकशाक, कालशाक, हेलाञ्चाशाक, मूली, कन्दमूल, काँकुड़, आम पनस, केला, दूध, दधि, घि, हरितकी, पिप्पली, जीरा, इमली, आता, आमलकी, चीनी, सैन्धव व सामुद्रिक नमक तैलविहीन पक्क व्यंजन इत्यादि। इस महिना में पुँइशाक, कलमीशाक, घीया, लाकी, वैगुन, परमल, बरवटी, बेर, चानादाल, तिलतैल, पान, सुपारी, गुड़ादि खाना निषिद्ध है। और आमिष खाद्य, मधु, सरिषा, मादकद्रव्य, मत्स, मांस, भावदुष्ट व क्रियादुष्ट खाद्यादि तथा प्याज, लहशुन, गाजरादि खाना मना है। इस महिना में ब्रह्मचर्य पालनीय व भूमिपर शयन करना कर्तव्य है।

पुरुषोत्तम महिना में कांसादि पात्र में भोजन करना निषिद्ध है। परन्तु पत्तल में भोजन ही श्रेष्ठ है।
पुरुषोत्तम माह में जो जो चीज त्याज्य हैं माह के अन्त में भगवान् पुरुषोत्तम की प्रसन्नता कामना करके वे सब ब्राह्मण को दान दे कर भोजनीय है।

व्रतभंग दिन भगवान् की प्रीति के लिए हरिप्रिय वैष्णवों को भोजन वस्त्रादि तथा दक्षिणादि भी देय है। तात्पर्य- हरिसेवा के संग संग हरिप्रिय द्विजातियों को यथायोग्य सम्मानादि कर्तव्य है।

इस माह में भगवत्प्रीति ही समस्त प्रकार के व्रतधर्मादि का तात्पर्य है। जिस में भगवत्प्रीति सम्बन्ध नहीं है वह प्रकृत धर्म वाच्य नहीं है। हरितोषण ही समस्त प्रकार के अनुष्ठान का सिद्धि लक्षण है, यह भागवत सिद्धान्त है। **स्वनुष्ठितस्य धर्मस्य संसिद्धिर्हरितोषणम्।** व्रतादि का उद्देश्य भी है हरिचरण में रति भक्ति व प्रीति लाभ। इसके अतिरिक्त सभी विफल है। भगवान् ब्रह्मा ने कहा- **पूर्तेन तपसा यज्ञैर्दानैर्योगैः समाधिना। राद्धं निःश्रेयसं पुंसां मत्प्रीतिस्तत्त्वविन्मतम्।** पूर्तकर्म कूपादि खनन व जलसत्रादि; तपस्या यज्ञ दान व्रत योगादि द्वारा मुझ में प्रीति ही उत्तम लाभ है यही परम श्रेयः लक्षण है। अतः भगवत्प्रीति ही समस्त प्रयत्न से साध्य है। यही समस्त साधन का एकमात्र उद्देश्य है। विशेषतः अन्य

धर्मकर्मादि छोड़ कर पुरुषोत्तम माह में अधिक प्रयत्न से भगवान् श्रीगोलोकनाथ की पूजादि ही करणीय है।

तात्पर्य यह है कि- बार महिना में ही मनुष्य कर्म में व्यस्त रहते हैं। इसीलिए वे सब धर्माचरण से विमुख रहते हैं। परन्तु अधिमास में कर्म व्यस्तता न रहने के पर परमार्थ साधन में तत्पर रह सकते हैं। जीव की परमार्थ सिद्धि के लिए ही अधिमास की व्यवस्था की है। पुरुषोत्तम मास का व्रत अन्य व्रत से अधिक माहात्म्य पूर्ण है। इस मास के समादर से भगवान् प्रसन्न हो जाते हैं। इस मास के अनादर से भगवान की अप्रसन्नता के कारण मनुष्य का अमंगल होता है। रहस्य यह है कि भगवान ही सर्वकाल में समाराध्य हैं। उनकी आराधना से ही सारे प्रकार के मंगलादि प्रकाशित होते हैं। जिनका जितना भगवान के साथ सम्बन्ध है वे उतने ही सौभाग्य का अधिकारी होते है। इसीलिए बुद्धिमान जन प्रयत्न पूर्वक भगवान से सम्बन्ध रखते हैं। उन सम्बन्ध से चण्डाल भी विप्र के मान्य पात्र होता है। अतएव भगवत्गुणानुवाद ही समस्त प्रकार के साधनों का सर्वोत्तम सत्फल है। भगवत्प्रपन्न ही सर्वतोभाव से सुखी हैं। संसार सागर में निमज्जमान जीवों के उद्धार के लिए उन भगवान् का गुण गान के बिना और कोई भी उपाय नहीं है। यह पुरुषोत्तम मास व पुरुषोत्तमदेव श्रीराधानाथ की समाराधना के लिए तथा

उनकी कृपा सन्तोष विधान के लिए उन्हीं की गुणमहिमामय इस क्षुद्र पुस्तक **श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी** भक्तसमाज में निवेदन किया हूँ। आशा है कि सारग्राही वैष्णवजन इस स्तुतिरस के द्वारा गोविन्द की प्रसन्नता व अपने परमार्थ जीवन की संजीवता लाभ करेंगे।

इति

वैष्णवदासानुदास

भक्तिसर्वस्व गोविन्द

श्रीपुरुषोत्तमस्तुति कौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

ॐकारविग्रहोत्तम ॐकारविजयध्वज।
ॐकारेण समाराध्य पाहि मां पुरुषोत्तम।।१

हे उत्तम ॐकारमूर्ति! हे ॐकारविजयध्वज! हे ॐकार के द्वारा आराध्यवर! हे पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

न-नतार्तिहन् नमस्येश नमितकामितार्थद।
नन्दहृत्परमानन्द पाहि मां पुरुषोत्तम।।२

हे प्रणतजनों के आर्तिहारी! हे नमस्यप्रधान! हे प्रणतजनों के वाञ्छाकल्पतरु! हे नन्दराज के हृदय के आनन्दस्वरूप पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

मो-मोहन मोहनाशन मोक्षण मोक्षधर्मदृक्।
मोपयाहि हृदयान्मे पाहि मां पुरुषोत्तम।।३

हे मोहन! हे मोह नाशकरनेवाले! हे मुक्तिदाता! हे मोक्षधर्मदर्शी! मेरे हृदय से जाओ मत। हे पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

भ-भवाब्धिपोतपादाब्ज भवभावनभास्कर।
भक्तितुष्ट भजद्बन्धो पाहि मां पुरुषोत्तम।।४

हे पुरुषोत्तम! तुम्हारे पादपद्म संसार सिन्धु को पार करानेवाला जहाज तुल्य है। तुम शिव के भाव को

बढाने वाले सूरज तुल्य। तुम भजनकारी के बन्धु, भक्ति से तुष्ट। हे पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

ग-गरुड़ासन गन्धर्वसंगीतगौरवाकर।
गतिज्ञान गुणाश्रय नपाहि मां पुरुषोत्तम।।५

हे गरुड़ासन! हे संगीतविशारद! हे दिव्य गतिज्ञानमय! हे सद्‌गुणालय! हे पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

व-वनमाल वनक्रीड़ वनिताकुलवल्लभ।
वन्यवेश बकान्तक पाहि मां पुरुषोत्तम।।६

हे वनमाली! हे वृन्दावनविहारी! हे ब्रजवधू के वल्लभ! हे वन्यवेशधारी! हे बकासुरघातन! हे पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

ते-तेजस्विन् तेजसामीश तेजितवृषभासुर।
तेजस्तोमपरावास पाहि मां पुरुषोत्तम।।७

हे तेजस्विन्! हे तेजस्वियों के ईश्वर! हे वृषभासुर के तेज बाढ़ानेवाले! हे तेजपुञ्ज के एकमात्र आकर पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

पु-पूण्यपात्पुण्डरीकाक्ष पुरुकीर्तिपुरन्दर।
पुरुहुतमखार्दन पाहि मां पुरुषोत्तम।।८

हे पूण्यास्पद! हे पद्मलोचन! हे विपुल कीर्तिधनों के पुरन्दर! हे इन्द्र का यज्ञ का खण्डन करनेवाले

पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

रु-रुद्रगीत रुचीश्वर रुक्मिणीप्राणवल्लभ।
रुधिराशनमोक्षेश पाहि मां पुरुषोत्तम।।९

हे रुद्रगीत! कीर्तिमान्! हे रुचि के ईश्वर! हे रुक्मिणी के प्राणवल्लभ! हे पूतना राक्षसी को मोक्ष देनेवाले पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

षो-षोड़शकलसौन्दर्यमाधुर्यवीर्यसागर।
षोड़शोपचारार्चित पाहि मां पुरुषोत्तम।।१०

हे सम्पूर्ण सौन्दर्यशाली! हे माधुर्य और वीर्य के अधीश्वर! हे षोड़श उपचार के द्वारा पूजित पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

त-तन्त्रमन्त्रसमाम्नाय तरणितनयाप्रिय।
तनुश्रीतरुणीकान्त पाहि मां पुरुषोत्तम।।११

हे तन्त्र मन्त्रों के समाश्रय! हे रविकन्या यमुना के प्रिय! हे क्षीणमध्या तरुणीजनों के वल्लभ पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

त-तड़िदम्बर तत्वेश तमालश्यामलाद्भक।
तद्भावभावितासक्त पाहि मां पुरुषोत्तम।।१२

हे पीतवसन! हे तत्त्वपति! हे तमालश्यामल कान्तिवाले! ईश्वरभाव से भावितजनों के प्रति आसक्त पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

मा-माधव माधवीकान्त मालतीमालक प्रभो।
मामपि पालयाच्युत पाहि मां पुरुषोत्तम।।१३

हे माधव! हे माधवीकान्त! हे मालति मालाधारी! हे प्रभो! हे अच्युत! हे पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

य-यदुवंशावतंसश्री यमुनाकुञ्जकेलिराट्।
यमलार्जुनभञ्जन पाहि मां पुरुषोत्तम।।१४

हे यदुकुल का अवतंस शोभाधारी! हे यामुनकुञ्ज में केलिविलासी! हे यमलार्जुनभंजन! हे पुरुषोत्तम! मेरा पालन करें।

द्वितीय भाग

नमस्ते पुरुषोत्तम नमस्ते परमेश्वर।
नमस्ते परमानन्द ब्रजानन्द नमोऽस्तु ते।।१५

हे पुरुषोत्तम! हे परमेश्वर! हे परमानन्द! हे ब्रजानन्द! तुमको बारम्बार प्रणाम करता हूँ।

नमस्तेऽस्तु जगन्नाथ राधानाथ प्रसीद मे।
विश्वनाथ रमानाथ स्वस्तये भव माधव।।१६

हे जगन्नाथ! तुम्हें नमस्कार। हे राधानाथ! मेरे प्रति प्रसन्न हों। हे विश्वनाथ! हे रमानाथ! हे माधव! मेरे प्रति आप मंगलप्रद हों।

रसो वै पुरुषोत्तमो रामश्च पुरुषोत्तमः।
कृष्णो ही पुरुषोत्तमः कान्तश्च पुरुषोत्तमः।१७

पुरुषोत्तम रस स्वरूप हैं, पुरुषोत्तम ही राम हैं, कृष्ण ही पुरुषोत्तम हैं, पुरुषोत्तम ही परम कान्त हैं।।

तत्वं वै पुरुषोत्तमस्तन्मयः पुरुषोत्तमः।
प्राणो वै पुरुषोत्तमः पावकः पुरुषोत्तमः।।१८

पुरुषोत्तम ही परम तत्त्व हैं, यह जगत् पुरुषोत्तममय ही है, पुरुषोत्तम ही प्राण स्वरूप हैं, पुरुषोत्तम ही पावनगुण के धाम हैं।

प्रभुर्हि पुरुषोत्तमो विभुश्च पुरुषोत्तमः।
आद्यश्च पुरुषोत्तमोऽनादिश्च पुरुषोत्तमः।।१९

पुरुषोत्तम ही प्रभु और विभु स्वरूप हैं। पुरुषोत्तम ही आदि और अनादि पुरुष हैं।

स्वामी वै पुरुषोत्तमः स्वर्गश्च पुरुषोत्तमः।
श्रेयो वै पुरुषोत्तमः प्रियश्च पुरुषोत्तमः।।२०

पुरुषोत्तम ही स्वामी वाच्य हैं, पुरुषोत्तम ही स्वर्ग स्वरूप हैं, पुरुषोत्तम ही श्रेयोमूल और प्रियतम हैं।

सेव्यो वै पुरुषोत्तमः साध्यश्च पुरुषोत्तमः।
इन्द्रो वै पुरुषोत्तमश्चन्द्रश्च पुरुषोत्तमः।।२१

पुरुषोत्तम ही सेव्य हैं, पुरुषोत्तम ही प्रीतिसाध्य हैं, पुरुषोत्तम ही इन्द्र और चन्द्र स्वरूप हैं।

ब्रह्मा वै पुरुषोत्तमो वेदाश्च पुरुषोत्तमः।
प्रमाणं पुरुषोत्तमः प्रज्ञानं पुरुषोत्तमः।।२२

पुरुषोत्तम ही ब्रह्म हैं, पुरुषोत्तम ही वेद स्वरूप हैं, पुरुषोत्तम ही प्रमाण स्वरूप हैं एवं पुरुषोत्तम ही प्रज्ञान (प्रकृष्ट ज्ञान) स्वरूपी हैं।

पूज्यो वै पुरुषोत्तमः पूर्णश्च पुरुषोत्तमः।
पतिर्वै पुरुषोत्तमो गतिश्च पुरुषोत्तमः।।२३

पुरुषोत्तम ही पूज्यतम व पूर्ण हैं, पुरुषोत्तम ही एकमात्र पति वाच्य व गतिप्रद हैं।

नायकः पुरुषोत्तमो नाविकः पुरुषोत्तमः।
शरण्यः पुरुषोत्तमो वरेण्यः पुरुषोत्तमः।।२४

पुरुषोत्तम ही नायक शिरोमणि व संसारसागर से पार करनेवाले नाविक हैं। पुरुषोत्तम ही सब के शरण्य व वरेण्य हैं।

सर्वं वै पुरुषोत्तमो दैवश्च पुरुषोत्तमः।
स्वस्ति वै पुरुषोत्तमो मङ्गलं पुरुषोत्तमः।।२५

पुरुषोत्तम ही सर्वमय हैं, पुरुषोत्तम ही परम देवता, पुरुषोत्तम ही स्वस्ति और मंगल स्वरूप हैं।

प्रमेयः पुरुषोत्तमः प्रथितः पुरुषोत्तमः।
यज्ञो वै पुरुषोत्तमो योगेशः पुरुषोत्तमः।।२६

पुरुषोत्तम ही प्रमेय एवं सर्ववेद प्रसिद्ध हैं, पुरुषोत्तम ही यज्ञमय व योगों के भी अधिपति हैं।

जीवनं पुरुषोत्तमो जीवातुः पुरुषोत्तमः।
पुराणः पुरुषोत्तमः पावनः पुरुषोत्तमः।।२७

पुरुषोत्तम ही जीवन और जीवातु हैं, पुरुषोत्तम ही पुराण और परमपावन हैं।

पुनातु पुरुषोत्तमः परमेशः सदावतु।
मासि च पुरुषोत्तमे देवो वै पुरुषोत्तमः।
सिद्धये पुरुषार्थानामाश्रये पुरुषोत्तमम्।।२८

ईश्वर पुरुषोत्तम हमें सदा पवित्र करें, पुरुषोत्तम मास में अधिदेवता पुरुषोत्तम ही हैं। पुरुषार्थ को सिद्ध करने के लिऐ हम पुरुषोत्तम को ही आश्रय करते हैं।

पुरुषोत्तमो हि परात्परः पराश्रयः परागतिः परास्थितिः पराकृतिः पराभक्तिः पराशक्तिः पराशान्तिः परानन्दः पराविद्या परामुक्तिः परान्वयो भवति।।२९

पुरुषोत्तम ही परात्पर तत्व, पराश्रय, परागति, परास्थिति, पराकृति, पराभक्ति, पराशक्ति, पराशान्ति, परानन्द, परामुक्ति एवं परवेदस्वरूप हैं।

पुरुषोत्तमादेतानि भूतानि जायन्ते पुरुषोत्तमेन
जीवन्ति पुरुषोत्तममभिविशन्ति भूमा वै
पुरुषोत्तमः।।३०

पुरुषोत्तम कृष्ण से ही यह सारी भूतजाति प्रकाशित है। पुरुषोत्तम के द्वारा ही जीवित है एवं

अन्त में पुरुषोत्तम में ही प्रवेश करते है। पुरुषोत्तम ही भूमा अर्थात् आनन्दमय पुरुष हैं।

पुरुषोत्तमो हि सर्वमयोऽमृतमयोऽधियज्ञोऽधिपुरुषः
पुरुषोत्तमात्परतरं कोऽपि नास्ति।।३१

पुरुषोत्तम ही सर्वमय, अमृतमय, अधियज्ञ, अधिदेव हैं। पुरुषोत्तम बिना और कोई भी परतर तत्त्व नहीं है।

परावरेषामीश्वरो हि पुरुषोत्तमः सत्यं परं पुरुषोत्तमं विद्यात्।। ३२

परावर के अर्थात् चराचर स्थावर जंगम के एकमात्र ईश्वर पुरुषोत्तम ही हैं। पुरुषोत्तम को परम सत्य स्वरूप जानें।

उत्तमःश्लोको हि पुरुषोत्तमः क्षेत्रक्षेत्रज्ञश्च
पुरुषोत्तमः।३३

पुरुषोत्तम ही उत्तमश्लोक वाच्य हैं। क्षेत्रक्षेत्रज्ञ पुरुष भी पुरुषोत्तम ही हैं।

नित्यमेव पुरुषोत्तमं ध्यायेत् यजेत् रसेदुपासीत च।
एक एक पुरुषोत्तमो ध्येयः कीर्तन्य गुण
सागरः।।३४

नित्यकाल पुरुषोत्तम की ही ध्यान और पूजा करें, यजना करें, रस के द्वारा उपासना करें। पुरुषोत्तम

ही एकमात्र ध्येय एवं कीर्तनीय गुणों के सागर स्वरूप हैं।

सर्वाधिवासः पुरुषोत्तमस्तु
सर्वाधिशास्ता पुरुषोत्तमो हि।
सर्वाधिशक्तिः पुरुषोत्तमोऽत्र
सर्वाधिमाता पुरुषोत्तमो वै।।३५

पुरुषोत्तम ही समस्त भूतों में निवास करते हैं सब के शासन करनेवाले पुरुषोत्तम ही हैं। पुरुषोत्तम ही सर्वशक्तिमान् एवं सबके परिमापक नियामक हैं।

आदौ च मध्ये पुरुषोत्तमोऽन्ते
सर्वान्तकान्तः पुरुषः स एकः।
चराचरो हि पुरुषोत्तमाद्धि
परायणश्चेत् पुरुषोत्तमो हि।।३६

अनन्तविश्व के आदि मध्य और अन्त में पुरुषोत्तम ही विराजमान् हैं। वे सबके कान्त एवं पुरुष वाच्य हैं अर्थात् पुरुषोत्तम कृष्ण ही एकमात्र पुरुष और सब ही उनकी शक्ति स्वरूप हैं। यह चराचर पुरुषोत्तम से ही उत्पन्न है एवं वे ही सब के आश्रय भी हैं।

भवन्ति जीवा प्रभवन्ति तद्धि
रसन्ति नित्यं पुरुषोत्तमं च।
जीवन्ति भक्ताः पुरुषोत्तमस्य
च्यवन्त्यभक्ताः पुरुषोत्तमस्य।।३७

पुरुषोत्तम की कृपा से सारे जीवजाति पैदा होती, उनमें ही जीते हैं। साधुजीवगण उनको ही रसयोग से भजन करते हैं। पुरुषोत्तम के भक्तगण ही जीवित वाच्य हैं एवं उनके अभक्तलोग ही स्वरूपच्युत एवं मृत वाच्य हैं।

याोगैश्च सर्वैः पुरुषोऽभियुक्तो
यागैश्च सर्वैः समुपासितोऽसौ।
वेदैश्च सर्वैः पुरुषोऽधिगम्यो
वादैश्च सर्वैरभिवाद्य एकः।।३८

समस्त योगों में पुरुषोत्तम ही सेव्य हैं, समस्त यज्ञ में वे ही उपास्य हैं, समस्त वेदशास्त्रों में वे ही वेद्य हैं एवं समस्त मतों में वे ही एकमात्र अभिवादन योग्य हैं।

मार्गैश्च सर्वैः सततं हि मृग्यो
मूढाश्च ते ये पुरुषं द्विषन्ति।
मुक्ताश्च ते ये पुरुषोत्तमेशा
मृतश्च ते येऽपुरुषोत्तमेशाः।।३९

सारे मार्गों में पुरुषोत्तम ही अन्वेषणीय हैं। तत्वमूर्खगण उनसे द्वेष करते हैं। पुरुषोत्तम जिनके ईश्वर हैं वे सब मुक्त हैं एवं उनके अभक्तगण मृत वाच्य हैं।।

नास्तीह सेव्यः पुरुषोत्तमं बिना
नास्त्येव भर्त्ता पुरुषोत्तमं बिना।

नास्त्येव त्राता पुरुषोत्तमं बिना
नास्त्येव गोप्ता पुरुषोत्तमं बिना।।४०

बिना पुरुषोत्तम सेव्य नहीं हैं, बिना पुरुषोत्तम और कोई भी भर्ता नहीं है, बिना पुरुषोत्तम परित्राण करनेवाले और कोई भी नहीं हैं एवं बिना पुरुषोत्तम गोप्ता अर्थात् पालनकर्ता दूसरा कोई भी नहीं हैं।।

कुतः प्रसिद्धिः पुरुषोत्तमाद्वै
केनेदमृद्धं पुरुषोत्तमेन।
क एव पूज्यः पुरुषोत्तमो हि
कस्मै पुमर्थः पुरुषोत्तमाय।।४१

कहाँ से ये सब प्रसिद्ध हुए है? पुरुषोत्तम से ही, किनके द्वारा वे सब समृद्ध है? पुरुषोत्तम के द्वारा ही। कौन पूज्य हैं? पुरुषोत्तम ही पूज्य हैं। किनके प्रति पुरुषार्थ सक्रिय है? पुरुषोत्तम के प्रति ही सक्रिय है।

तीर्थास्पदो वै पुरुषोत्तमांघ्रौ
गुणास्पदं वै पुरुषोत्तमाङ्गम्।
लीलास्पदा वै पुरुषोत्तमेहा
शोभास्पदं वै पुरुषोत्तमास्यम्।।४२

पुरुषोत्तम के पादपद्म ही तीर्थास्पद हैं, पुरुषोत्तम के श्रीअंग गुणास्पद है, पुरुषोत्तम की चेष्टा ही लीलास्पद है एवं उनका मुखचन्द्र ही शोभास्पद है।

भवन्ति वृद्धाः पुरुषोत्तमज्ञा
भवन्ति सिद्धाः पुरुषोत्तमेक्षाः।
भवन्ति शुद्धाः पुरुषोत्तमान्ता
भवन्ति मुक्ताः पुरुषोत्तमार्ह्याः।।४३

पुरुषोत्तम के ज्ञानीऔं ही वृद्ध हैं, पुरुषोत्तम के दर्शीऔं ही सिद्ध हैं, पुरुषोत्तमगत चित्तों ही शुद्ध हैं एवं पुरुषोत्तम के पूजकों ही मुक्त वाच्य हैं।।

नमो नमस्ते पुरुषोत्तमाय
नमो नमस्ते परमेश्वराय
नमो नमस्ते परमाधिपाय
नमो नमस्ते परमार्थदाय।।४४

पुरुषोत्तम के लिए बारम्बार नमस्कार है, परमेश्वर के लिए बारम्बार नमस्कार है, परमाधीश्वर के लिऐ बारम्बार नमस्कार है एवं परमार्थदाता के लिए बारम्बार नमस्कार है।

नमो नमस्ते यदुनन्दनाय
नमो नमस्ते यवनार्दनाय।
नमोनमस्ते यमशासनाय
नमो नमस्ते यजताम्बराय।।४५

यदुनन्दन के लिए बारम्बार नमस्कार है, कालयवनघाती आपको बारम्बार नमस्कार है, यम को

शासन करने वाले के लिए बारम्बार नमस्कार है एवं याज्ञिकप्रवर के लिए बारम्बार नमस्कार है।।

नमो नमस्ते पशुपालकाय
नमो नमस्ते वसुपालकाय।
नमो नमस्ते व्रजपालकाय
नमो नमस्ते व्रतपालकाय।।४६

पशुपालक आपको बारम्बार नमस्कार है, वसुपालक को भी बारम्बार नमस्कार है, ब्रजपालक के लिऐ बारम्बार नमस्कार है एवं व्रतपालक आपको बारम्बार नमस्कार है।।

नमो नमस्ते निखिलेश्वराय
नमो नमस्ते नमितेश्वराय।
नमो नमस्ते ललितेश्वराय
नमो नमस्ते क्षमितेश्वराय।।४७

निखिलेश्वर पुरुषोत्तम के लिए बारम्बार नमस्कार है, प्रणतजनों के ईश्वर के लिए बारम्बार नमस्कार है, धीरललित ईश्वर के लिए बारम्बार नमस्कार है एवं क्षमाशीलजनों के ईश्वर पुरुषोत्तम के लिए बारम्बार नमस्कार है।

नमो नमस्ते रसिकेश्वराय
नमो नमस्तेवशिकेश्वराय।

नमो नमस्तेविमलेश्वराय
नमो नमस्ते कमलेश्वराय।।४८

रसिकेश्वर आपको बारम्बार नमस्कार है, वशिकेश्वर के लिए बारम्बार नमस्कार है, विमलेश्वर के लिऐ बारम्बार नमस्कार है एवं कमलेश्वर (कमला के ईश्वर) आपको बारम्बार नमस्कार है।।

नमो नमस्तेऽसुरमोक्षणाय
नमो नमस्ते सुररक्षणाय।
नमो नमस्ते नलिनेक्षणाय
नमो नमस्ते कलितक्षणाय।।४९

असुरजनों के मुक्तिदाता पुरुषोत्तम को बारम्बार नमस्कार है, सुरजनों के रक्षक को बारम्बार नमस्कार है, नलिनेक्षण कृष्ण को बारम्बार नमस्कार है एवं कलि के तक्षणकारी अर्थात् ध्वंसकारी आपको भी बारम्बार नमस्कार है।।

नमो नमस्ते वरदेश्वराय
नमो नमस्ते वरुणेश्वराय।
नमो नमस्ते तरुणेश्वराय
नमो नमस्ते करुणेश्वराय।।५०

वरदेश्वर पुरुषोत्तम आप को बारम्बार नमस्कार है, वरुणेश्वर को बारम्बार नमस्कार है, तरुणीश्वर

को बारम्बार नमस्कार है एवं करुणेश्वर पुरुषोत्तम आप के लिए बारम्बार नमस्कार है।।

नमो नमस्ते शशिशेखराय
नमो नमस्ते सुरशेखराय।
नमो नमस्ते कुलशेखराय
नमो नमस्ते वीरशेखराय।।५१

शशिशेखर आपको बारम्बार नमस्कार है, सुरशेखर को बारम्बार नमस्कार है, कुलशेखर के लिए बारम्बार नमस्कार है एवं वीरशेखर को भी बारम्बार नमस्कार है।।

यस्यास्ति भक्तिः पुरुषोत्तमांघ्रौ
तन्नास्त्यसाध्यं दिवि भूरसायाम्।
स एव लोके पुरुधन्यधन्यो
न तत्समो भाग्यभरश्च कोऽपि।।५२

पुरुषोत्तम कृष्ण के पदारविन्द में जिनकी भक्ति है उनके लिये स्वर्ग मर्त पातालों में कुछ भी असाध्य नहीं है। वे ही इस लोक में परम धन्यातिधन्य हैं और उनके समान कोई भी भाग्यवान् नहीं हैं।

मतिर्ममास्तां पुरुषोत्तमे तु
रतिर्ममास्तां पुरुषोत्तमे तु।
गतिर्ममेकः पुरुषोत्तमो वै
स्थितिर्ममास्तां पुरुषोत्तमाख्ये।।५३

पुरुषोत्तम में ही मेरी मति रहे, पुरुषोत्तम में ही रति हो, पुरुषोत्तम ही एकमात्र मेरी गति हैं एवं पुरुषोत्तम में ही मेरा स्थिति हो। यही मेरी प्रार्थना है।

पुरुषोत्तम हे पुरुषोत्तम हे
पुरुधार्ष्ट्रनिधिं कुरु मुक्तविधिम्।
मुचुकुन्दपते ब्रजबन्धुगते
भवनिष्ठमतिं कुरु धन्यकृतिम्।।५४

हे पुरुषोत्तम! हे पुरुषोत्तम! अतिशय धृष्टता की निधि स्वरूप मुझे संसार विधि से मुक्त करो।
हे मुचुकुन्दपति! हे ब्रज के बन्धु सुवलादि की गति! संसारनिष्ठमति मुझ को आप श्रीचरण सेवा में लगाकर धन्य कीजिये।।

पुरुषोत्तम कापुरुषोत्तमकं
कृपयाच्युत सत्पुरुषं कुरु माम्।
वरदोत्तम सद्वसुदोत्तम हे
वृणुताञ्च दयास्पद दास्यपदे।।५५

हे पुरुषोत्तम! हे अच्युत! कापुरुषाधम मुझपर कृपा करके सत्पुरुष कीजिये। हे वरदोत्तम! हे सद्वुदोत्तम! (सत्सम्पद देनेवाले जनों में उत्तम) हे दयास्पद! आपका दास्यपद मुझे प्रदान कीजिये।।

पुरुषोत्तम सद्गतिदोत्तम हे
पुरुषादमतिं कुरु मां सुमतिम्।
विजयोत्तम सञ्जयसत्तम मे
तव पादरसे जयताञ्च मतिः।।५६

हे सत्गतिदाताऔं में उत्तम पुरुषोत्तम! राक्षसमति मुझ को सुमतिमान् करें। हे विजयिवर! हे सञ्जय सत्तम! आपके पदसेवारस में मेरी मति जय युक्त हो।

पुरुषोत्तम माभजनीयतमं
पचनीयतमं नरकेषु हरे।
नयतां वरणीयतमेऽभिरमे
दयनीयतमं कृपयाख्यतमम्।।५७

हे हरे! हे पुरुषोत्तम! हे प्रसिद्धतम! भजनहीन नरक यन्त्रणा से आतुर अतएव आपकी दया का श्रेष्ठपात्र मुझे तुम्हारे मनोरम और वरणीय दास्यपद में ले जाओ।।

निगमोत्तमवादविदुत्तम हे
हरनारदवन्द्य सुमन्दमतेः।
प्रभुतां भज हे पुरुषोत्तम मा
मपदस्तमपास्तगुणस्थमव।।५८

ओहे वेदों के उत्तमवादों से अभिज्ञतम! हे पुरुषोत्तम! हे शिव नारदादि के वन्द्य आप इस मन्दमति

के प्रति प्रसन्न हों एवं अपदस्थ और अपगुणस्थ मेरा पालन करें।

पुरुषोत्तम मां कुरु शान्ततमं
सुविक्ततमं गुरुभक्ततमम्।
हरिभक्तिरसोन्मदभृद्ग तमं
तमचिन्त्यतमं भज आर्यतमम्।।५९

हे पुरुषोत्तम! मुझे विवाद व विपद में शान्ततम, संसार भोग से विरक्तम,गुरुभक्ति में महत्तम तथा हरिभक्तिरसपान में मत्त भृंगराज के समान करों एवं हे अचिन्त्यतम! हे आर्यतम! में आपका भजन करता हुँ।

यदुनन्दन यादव योगपते
मधुसूदन माधव मञ्जुगते।
धरणीधरसोदरसिद्धमते
पुरुषोत्तम पाहि पराप्रकृते।।६०

हे यदुनन्दन! हे यादवपति! हे योगपति! हे मधुसूदन! हे माधव! हे मनोरमगतिशील! हे रामानुज! हे सिद्धमति!, हे पुरुषोत्तम! हे पराप्रकृतिपति! मेरी रक्षा करें।

विमलाम्बुदकान्तिमदद्व वर
विजिताष्टपदोल्लसदम्बर हे।

विधिशंकरनारदपूज्यतम
पुरुषोत्तम पाहि परात्परम।।६१

हे विमलमेघश्यामकलेवर! हे पीताम्बरधारी! हे विधिशंकरनारदादिके पूज्यतम! हे पुरुषोत्तम! हे परात्पर प्रभु! मेरी भक्तिधर्म से रक्षा करें।।

वनकेलिविशारद वेणुधर
वनिताशतसेवितसेव्यवर।
वृषभासुरदर्पनिशान्तकर
पुरुषोत्तम पाहि शुभांशुकर।।६२

हे वनकेलि विशारद! हे वेणुपाणि! हे ब्रज के शत शत वनिताओं के सेव्यतम! हे वृषासुर के दर्प हारी व प्राण विनाशक! हे शुभ विस्तारी पुरुषोत्तम! मेरी रक्षा करें।

कमलेक्षण काम्यवनाधिपते
कमलाकुचकुंकुमरागभृते।
कमलासनमोहन मुग्धमते
पुरुषोत्तम पाहि पुमर्थगते।।६३

हे कमलनयन! हे काम्यवन के अधिपति! हे कमला के कुचकुंकुमराग से भूषित हृदयवाले! हे ब्रह्ममोहन! हे माधुर्य विलास से मुग्धमति! हे पुरुषार्थगति! हो पुरुषोत्तम! मेरी रक्षा करें।

त्रिपुरारिपरात्परपूज्यपद
त्रिदशेश्वरसंशितदिव्यमद।
त्रिगुणैरणभाव्य मुकुन्दरद
पुरुषोत्तम पाहि सुपारिषद।।६४

हे त्रिपुरारि शिव के परात्पर! हे पूज्यपाद! हे देवतागणों के प्रशंसित! हे दिव्यगुण और कीर्ति मद बिहारी! हे त्रिगुणातीत अचिन्त्य पद! हे कुन्द दशन! हे शोभनपार्षदों से परिवेष्टित पुरुषोत्तम! मेरी रक्षा करें।

महिमोत्तम मङ्गलमञ्जुतम
मुदितोत्तम मागधगर्वयम।
मधुमङ्गलमित्र रिपुत्रतम
पुरुषोत्तम पाहि परात्परम।।६५

हे महिमा से सर्वोत्तम! हे मंगलगुण से मनोरम! हे आनन्दीतम! हे जरासन्ध का गर्व विनाशी! हे मधुमंगल के मित्रवर! हे शत्रु के मुक्तिदाता के परात्पर पुरुषोत्तम! मेरी रक्षा करें।।६५

पणितोत्तम पूज्यतमैकतम
प्रणतैकपुमर्थवदान्यतम।
पशुपालकबालकमित्रतम
पुरुषोत्तम पाहि वरेण्यतम।।६६

हे स्तवनीयतम! हे पूज्यतम में अन्यतम! हे प्रणत

जनों के पुरुषार्थ प्रेमदान में एकमात्र वदान्यतम पुरुषोत्तम! मेरी रक्षा करें।।६६

शिखिशेखर नागरशेखर हे
शशिशेखर गौरवशेखर हे।
रसिकेश्वर रासरसेश्वर हे
पुरुषोत्तम पाहि परात्पर हे।। ६७

हे शिखिशेखर! हे नागरशेखर! हे शशिशेखर! हे गौरव शेखर! हे रसिकेश्वर! हे रासरसेश्वर! हे परात्पर पुरुषोत्तम! मेरी रक्षा करें।

वरणीयतमाश्रयणीयतम
कथनीयतम श्रवणीयतम।
यजनीयतम स्मरणीयतम
पुरुषोत्तम पाहि शरण्यतम।।६८

हे वरेण्यतम! हे आश्रयणीयतम! हे कथनीयतम! हे श्रवणीयतम! हे यजनीयतम! हे स्मरणीयतम! हे पुरुषोत्तम! मेरी रक्षा करें।

न धनं न जनं नहि काव्यगुण
मपवर्गसुखञ्च हरे वृणवै।
प्रतिजन्मनि ते पददास्यरसं
रसनाय विदेहि वरेश वरम्।।६९

हे पुरुषोत्तम! हे वरेश! आपसे धन जन पाण्डित्यादि गुण व मोक्षसुखादि कुछ भी नहीं चाहता हूँ। आपसे प्रति जन्म में आपका दास्य रस आस्वादन का मुझे वर प्रदान करें।

पुरुषोत्तमकीर्तिनदी वदनं
प्लवतां नयनं खलु रूपमहो।
श्रवणं पुरुषोत्तमकेलिरसं
पिवतां नितरां वसताद्धं हृदि।।७०

पुरुषोत्तम की कीर्तिनदी मेरे मुख को प्लावित करे एवं उनका दिव्य रूप मेरे नयन को आनन्दित करे। पुरुषोत्तम का केलिरस मेरे कान पान करते रहें एवं पुरुषोत्तम मेरे हृदय में वास करें।

पतिरेव हरिर्गतिरेकचरी
रतिरेकपरास्मृतिरेकतरा।
पुरुषस्य परस्य कृतिः परमाः
स्मृतिरेकतमा धृतिरन्यतमा।।७१

पुरुषोत्तम ही मेरे एकमात्र पति हैं, वे ही एकमात्र गति हैं, पुरुषोत्तमकी स्मृति ही परा वाच्य है।

उनकी लीला ही परमश्रेष्ठ है तथा उनकी स्मृति एकतमा व धृति ही धन्यतमा है।।

ॐ सत्यं परं पुरुषोत्तमं धीमहि।।७२

परमसत्य पुरुषोत्तम का हम ध्यान करते हैं।

ॐ पुरुषोत्तमोऽवतु पुरुषोत्तमः पुनातु।७३

पुरुषोत्तम मेरी रक्षा करें तथा पालन भी करें।

ॐ स्वस्ति नः पुरुषोत्तमः स्वस्ति नः परमेश्वरः।।
स्वस्ति नः परमोदयः स्वस्ति नः परमाश्रयः।।७४

परम महिमास्पद, परमाश्रय, परमेश्वर पुरुषोत्तम हमारा स्वस्ति मंगल दान करें।

पुरुषोत्तमः सदैव स्वस्ति कुर्यात् सतां गतिः।
स्वस्तये पुरुषोत्तममाश्रये सुभगाश्रयम्।।७५

साधुजनों की गति पुरुषोत्तम सदा ही हमारा मंगल के निमित्त हों। मंगल के लिए हम सौभाग्यराशि के समाश्रय पुरुषोत्तम का आश्रय करते हैं।

ॐ पुरुषोत्तमः शान्तिः ॐ पुरुषोत्तमः शान्तिः ॐ पुरुषोत्तमः शान्तिः।।७६

ॐ पुरुषोत्तम ही शान्तिमय, पुरुषोत्तम ही शान्तिमय, एकमात्र पुरुषोत्तम ही शान्तिमय हैं।।७६

—○:○:○:○:—

श्रीपुरुषोत्तम देहि पदम्

अधिमासेश्वर सेव्यपरात्पर सेवकशंकर देहि पदम्।१
श्यामलसुन्दर पीतवराम्बर नागरशेखर देहि पदम्।।२
रञ्जितराधिक रासविलासक गोकुलपालक देहि पदम्।३
सौम्यसुदर्शन प्रेमविवर्षण नतसंकर्षण देहि पदम्।।४
सूदितपूतन नवरसनूतन केशिनिषूदन देहि पदम्।५
धर्मसनातन नर्मनिकेतन कर्मविशातन देहि पदम्।।६
दुष्कृतिभञ्जन कालियगञ्जन सज्जनरञ्जन देहि पदम्।७
अच्युत माधव नेत्रमहोत्सव रूपरसार्णव देहि पदम्।।८
भृत्यविनोदन दैत्यविमोहन देवकिनन्दन देहि पदम्।९
सर्वजयार्चित सुभगशतोर्जित गोविन्दस्तुत देहि पदम्।।१०

—○:○:○:○:—

श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय

श्रीपुरुषोत्तमस्तुतिकौमुदी

ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय